



Sandeep



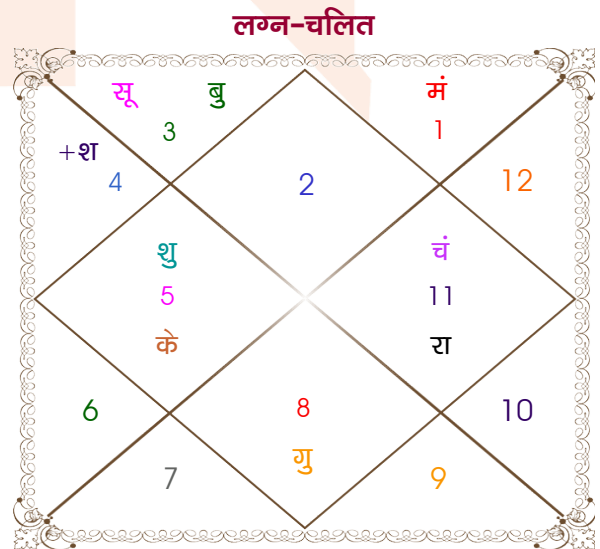
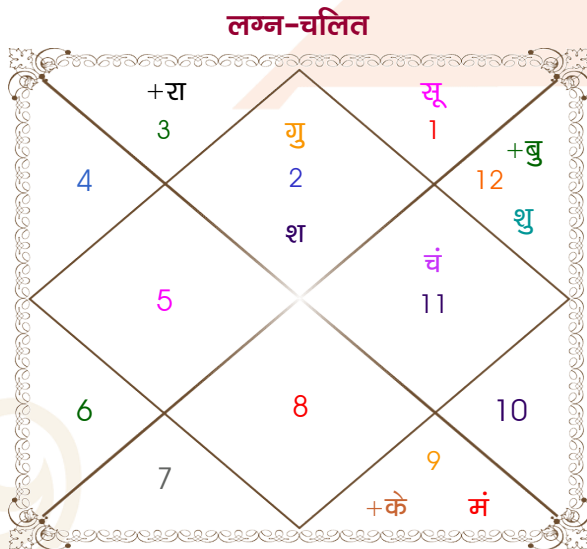
Sanjana

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121809702

पुल्लिंग : _____ लिंग _____ : स्त्रीलिंग
 18/04/2001 : _____ जन्म तिथि _____ : 5-06/07/2007
 बुधवार : _____ दिन _____ : गुरु-शुक्रवार
 घंटे 08:00:00 : _____ जन्म समय _____ : 04:00:00 घंटे
 घटी 04:49:49 : _____ जन्म समय(घटी) _____ : 55:34:43 घटी
 India : _____ देश _____ : India
 Sanwer : _____ स्थान _____ : Ujjain
 22:59:00 उत्तर : _____ अक्षांश _____ : 23:11:00 उत्तर
 75:50:00 पूर्व : _____ रेखांश _____ : 75:50:00 पूर्व
 82:30:00 पूर्व : _____ मध्य रेखांश _____ : 82:30:00 पूर्व
 घंटे -00:26:40 : _____ स्थानिक संस्कार _____ : -00:26:40 घंटे
 घंटे 00:00:00 : _____ ग्रीष्म संस्कार _____ : 00:00:00 घंटे
 06:04:04 : _____ सूर्योदय _____ : 05:45:42
 18:48:00 : _____ सूर्यास्त _____ : 19:16:25
 23:52:13 : _____ चित्रपक्षीय अयनांश _____ : 23:57:49

विंशोत्तरी मंगल 3वर्ष 0मा 5दि गुरु 24/04/2022 24/04/2038	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी गुरु 8वर्ष 2मा 18दि शनि 23/09/2015 22/09/2034		
गुरु	11/06/2024	28:24:04	मीन	व	मिथु	09:11:53		
शनि	23/12/2026	16:57:30	वृष	व	वृश्चि	17:29:50		
बुध	30/03/2029	07:40:23	मीन	व	शुक्र	01:18:50		
केतु	06/03/2030	05:47:54	वृष	शनि	कर्क	28:52:39		
शुक्र	04/11/2032	15:28:42	मिथु	व	राहु	कुंभ	14:28:56	
सूर्य	23/08/2033	15:28:42	धनु	व	केतु	सिंह	14:28:56	
चन्द्र	23/12/2034	00:16:27	कुंभ	व	हर्ष	व	कुंभ	24:40:07
मंगल	29/11/2035	14:45:49	मक	व	नेप	व	मक	27:37:45
राहु	24/04/2038	21:09:04	वृश्चि	व	प्लूटो	व	धनु	03:15:07



अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	शूद्र	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	मानव	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	मित्र	विपत	3	1.50	--	भाग्य
योनि	सिंह	सिंह	4	4.00	--	यौन विचार
मैत्री	शनि	शनि	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	मनुष्य	6	0.00	हाँ	सामाजिकता
भकूट	कुम्भ	कुम्भ	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	आद्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	28.50		

गणदोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

दकममच का वर्ग मार्जार है तथा दरदं का वर्ग मेष है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार दकममच और दरदं का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

दकममच मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम भाव में स्थित है।

दरदं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना ।

द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना । ।

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल दरदं कि कुण्डली में द्वादश भाव में मेष राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम् ।

विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा । ।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल दरदं कि कुण्डली में स्वराशि में है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

श्री संकटमोचन ज्योतिष केंद्र

नरसिंह मंदिर, कलाल घाट, तोड़ा, सांवेर (जिला) इंदौर

वैदिक पंडित पंकज मंडलोई ज्योतिष आचार्य

+91 9893119214

pandit11317@gmail.com

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते ।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता ।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है ।

**त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः ।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत् ।।**

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है ।

क्योंकि शनि ११दरदं कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है ।

११दकममच तथा ११दरदं में मंगलीक मिलान ठीक है ।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम है ।

श्री संकटमोचन ज्योतिष केंद्र

नरसिंह मंदिर, कलाल घाट, तोड़ा, सांवेर (जिला) इंदौर

वैदिक पंडित पंकज मंडलोई ज्योतिष आचार्य

+91 9893119214

pandit11317@gmail.com